Crop Weather Watch Group Advisory

U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की पन्द्रहवीं बैठक

दिनॉक : 26 जुलाई, 2017
समय : 12.00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह की वर्ष 2017 की पन्द्रहवीं बैठक प्रो. राजेन्द्र कुमार, महानिदेशक, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनॉक 26 जुलाई, 2017 को उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में निदेशक, आंचलिक मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ, कृषि विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम, तिलहन व कीट वैज्ञानिक, कृषि विश्वविद्यालय, फैजाबाद के मौसम एवं दलहन वैज्ञानिक एवं पूर्व धान प्रजनक, कृषि विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के मौसम वैज्ञानिक, उद्यान विभाग, कृषि विभाग, पशुपालन विभाग, मत्स्य, वन विभाग, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवंशिकी संसाधन ब्यूरो के वैज्ञानिक, रिमोट सेंसिंग अप्लीकेशन सेंटर के वैज्ञानिक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के मौसम वैज्ञानिक, इफ्को किसान संचार लि. के प्रतिनिधि तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार इस सप्ताह (दिनॉक 26 जुलाई से 1 अगस्त, 2017 तक) उत्तर प्रदेश के समस्त जनपदों में सप्ताह के प्रथम तीन दिनों तक हल्के से मध्यम तथा शेष दिनों में मध्यम से घने बादल छाये रहेंगे। प्रदेश के जलवायुविक भाबर एवं तराई क्षेत्र में स्थित सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, पीलीभीत, रामपुर एवं बरेली के उन क्षेत्रों, जो हिमालय से लगे हुए हैं, में 26 को हल्की एवं 27, 28 जुलाई में स्थानीय स्तर पर छिटपुट/हल्की तथा सप्ताह के अंतिम दिनों में हल्की से मध्यम वर्षा, पश्चिमी मैदानी जलवायुविक क्षेत्र के जनपद मेरठ, मुजफ्फरनगर, गाजियाबाद, नोएडा व बुलन्दशहर, बागपत में हल्की वर्षा दिनांक 26, 27, 28 में स्थानीय स्तर पर तथा 29 एवं 30 में हल्की से मध्यम वर्षा और मध्य पश्चिमी मैदानी जलवायुविक क्षेत्र के जनपदों यथा बिजनौर, रामपुर, मुरादाबाद साथ ही दक्षिणी–पश्चिमी अर्ध–शुष्क क्षेत्र के जनपदों यथा अलीगढ़, मथुरा, आगरा, एटा, मैनपुरी, फिरोजाबाद एवं हाथरस में उक्त तिथियों में सप्ताह के प्रथम दो दिनों में स्थानीय स्तर पर छिटपुट तथा कहीं–कहीं हल्की से मध्यम वर्षा तथा सप्ताह के अंतिम दिनों में मध्यम वर्षा होने की सम्भावना है। मध्य मैदानी क्षेत्र के जनपद यथा शाहजहॉपुर, फर्रूखाबाद, कन्नौज, कौशाम्बी, हरदोई, इटावा, औरैया, कानपुर देहात, इलाहाबाद, उन्नाव, लखनऊ, रायबरेली, सीतापुर एवं लखीमपुर खीरी में दिनांक 26 में हल्की, दिनांक 27, 28 में स्थानीय स्तर पर छिटपुट एवं दिनांक 29 व 30 में मध्यम वर्षा के आसार हैं। बुन्देलखण्ड क्षेत्र के जनपदों झॉसी, जालौन, हमीरपुर, महोबा, ललितपुर, बॉदा, चित्रकूट में इस सप्ताह दिनांक 26 जुलाई में स्थानीय स्तर पर हल्की, अगले दो दिनों में कहीं–कहीं छिटपुट अथवा हल्की वर्षा तथा सप्ताह के शेष दिनों में हल्की से मध्यम वर्षा होने की सम्भावना है। उत्तरी–पूर्वी मैदानी क्षेत्र के सभी जनपदों यथा श्रावस्ती, गोंडा, बलरामपुर में 28, 29 एवं 30 जुलाई में हल्की से मध्यम वर्षा और पूर्वी मैदानी क्षेत्र के सभी जनपदों यथा गाजीपुर, चन्दौली, सुल्तानपुर, आजमगढ़, फैजाबाद, बाराबंकी, जौनपुर, वाराणसी आदि में भी इस सप्ताह 28, 29 एवं 30 में हल्की से मध्यम वर्षा और विंध्यांचल जलवायुविक क्षेत्र के सोनभद्र, इलाहाबाद, मिर्जापुर, भदोही एवं सन्त रविदास नगर में इस सप्ताह 28, 29 एवं 30 में हल्की से मध्यम वर्षा होने की सम्भावना है।

इस सप्ताह प्रदेश के पश्चिमी, भाबर एवं तराई क्षेत्र, दक्षिणी–पश्चिमी अर्धशुष्क क्षेत्र, मध्य मैदानी क्षेत्रों में सप्ताह के प्रारम्भिक तीन दिनों तक अधिकतम तापमान 32–35 डिग्री सेंटीग्रेड तथा बाद के दिनों में 28–30 डिग्री सेंटीग्रेड के मध्य रहने के आसार हैं जो सप्ताह के सामान्य तापक्रम से 1–2 डिग्री सेंटीग्रेड अधिक है वहीं न्यूनतम तापमान सप्ताह के प्रारम्भिक दिनों में 23–25 डिग्री सेंटीग्रेड एवं अंतिम दिनों में 26–28 डिग्री सेंटीग्रेड के मध्य रहने के आसार हैं जो औसत रूप से सामान्य से 1–2 डिग्री सेंटीग्रेड अधिक है। प्रदेश के पूर्वी, उत्तर पूर्वी, पूर्वी मैदानी, बुन्देलखण्ड एवं विंध्य क्षेत्र में इस सप्ताह के प्रथम तीन दिनों तक दिन का अधिकतम तापमान का रेंज 32–34 डिग्री सेंटीग्रेड एवं न्यूनतम तापमान का रेंज 22–24 डिग्री सेंटीग्रेड के मध्य तथा अंतिम दिनों में अधिकतम 28–31 डिग्री सेंटीग्रेड एवं न्यूनतम 25–27 डिग्री सेंटीग्रेड रहने की सम्भावना है जो सप्ताह के औसत तापमान से 1–2 डिग्री सेंटीग्रेड अधिक है। सप्ताह के प्रारम्भ के दो दिनों में दक्षिण–पूर्वी/उत्तर पूर्वी हवाऍ प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्रों में तथा प्रदेश के शेष क्षेत्रों यथा बुन्देलखण्ड, विंध्य क्षेत्र में दक्षिण–पश्चिमी तथा पूर्वी मैदानी क्षेत्र, उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र एवं मध्य मैदानी क्षेत्रों में दक्षिण पूर्वी एवं दक्षिण पश्चिमी हवाऍ 7–19 किमी. प्रति घंटे की औसत गति से चलने के आसार हैं। इस सप्ताह प्रदेश की औसत सापेक्षिक आर्द्रता प्रातःकाल 75–85 प्रतिशत एवं दोपहर के समय 40–50 प्रतिशत रहने की सम्भावना है। कुल मिलाकर यह सप्ताह आर्द्र रहेगा।

कृषि निदेशालय, उ.प्र. से दिनांक 24 जुलाई, 2017 तक प्राप्त वर्षा आंकड़ों के अनुसार प्रदेश के 75 जनपदों में 1 जून से 24 जुलाई तक सामान्य वर्षा 312.5 मिमी. के सापेक्ष 277 मिमी. प्राप्त हुई है जो सामान्य की 88.7 प्रतिशत है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में सामान्य 183.3 मिमी. के सापेक्ष 148.5 मिमी. हुई जो सामान्य की 81 प्रतिशत है वहीं पूर्वी उत्तर प्रदेश में कुल औसत वर्षा 250.1 मिमी. के सापेक्ष 280.1 मिमी. प्राप्त हुई जो सामान्य वर्षा की 112.0 प्रतिशत है। मध्य उत्तर प्रदेश की सामान्य वर्षा 213.1 मिमी. के सापेक्ष 249.5 मिमी. वर्षा प्राप्त हुई जो सामान्य की 117.1 प्रतिशत है वहीं बुन्देलखण्ड क्षेत्र में 200.9 मिमी. वर्षा प्राप्त हुई जो सामान्य वर्षा (219.7 मिमी.) का 91.5 प्रतिशत है। अब तक प्राप्त वर्षा ऑकड़ों के अनुसार सामान्य से अधिक वर्षा (120 प्रतिशत अथवा अधिक) के अन्तर्गत 13 जनपद, सामान्य वर्षा (80–120 प्रतिशत) के अन्तर्गत 34 जनपद, सामान्य से कम (60–80 प्रतिशत) 16 जनपद, 10 जनपदों में न्यून (40–60 प्रतिशत) एवं 2 जनपदों यथा गाजियाबाद एवं पीलीभीत में अति न्यून (40 प्रतिशत से कम) वर्षा प्राप्त हुई है। प्रदेश के कासगंज जनपद में सामान्य से 156.8 प्रतिशत अधिक वर्षा प्राप्त हुई है।

कृषि विभाग से दिनांक 21 जुलाई, 2017 तक प्राप्त आच्छादन आंकड़ों के अनुसार कुल खरीफ फसलों के लिये निर्धारित लक्ष्य 91.58 लाख हे. के सापेक्ष 59.68 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है जो लक्ष्य का 65.17 प्रतिशत है। अब तक धान की नर्सरी लक्ष्य 3.97 लाख हे. के सापेक्ष 3.93 लाख हे. में डाली जा चुकी है जो लक्ष्य का 99.04 प्रतिशत है। धान के लक्ष्य 59.66 लाख हे. के सापेक्ष 38.94 लाख हे. की पूर्ति की जा चुकी है जो लक्ष्य का 65.28 प्रतिशत है, मक्का फसल लक्ष्य 7.27 लाख हे. के सापेक्ष 6.37 लाख हे., ज्वार 1.82 लाख हे. के सापेक्ष 1.10 लाख हे., बाजरा लक्ष्य 9.07 लाख हे. के सापेक्ष 4.20 लाख हे., उर्द लक्ष्य 5.94 लाख हे. के सापेक्ष 3.49 लाख हे., मूँग लक्ष्य 0.44 लाख हे. के सापेक्ष 0.31 अरहर लक्ष्य 3.37 लाख हे. के सापेक्ष 2.09 लाख हे., मूँगफली 0.95 लाख हे. के सापेक्ष 0.88 लाख हे., सोयाबीन लक्ष्य 0.20 लाख हे. के सापेक्ष 0.15 लाख हे. एवं तिल 2.75 लाख हे. के सापेक्ष 2.00 लाख हे. की बुवाई की जा चुकी है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले सप्ताह कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये गएः–

- प्रदेश में दिनांक 29 एवं 30 जुलाई को वर्षा होने की सम्भावना को देखते हुए इन तिथियों में सिंचाई स्थगित रखें तथा कृषि रसायनों का छिड़काव मौसम साफ रहने पर ही करें।
- धान की रोपाई हेतु मौसम अनुकूल है अतः कृषक यथाशीघ्र रोपाई करें।
- रोपाई वाले खेत में 1 फीट ऊँची मेढ़ बनाएं ताकि वर्षा जल संचित कर लाभ लिया जा सके।
- धान की तैयार पौध की रोपाई जहां तक संभव हो 4 ग्राम ट्राईकोडर्मा प्रति लीटर पानी में घोलकर जड़ों को उपचारित करके ही करें।
- चार सप्ताह से अधिक वाली पौध की रोपाई से पहले चोटी काट दी जाए इससे तनावेधक व हिस्पा कीट का प्रकोप कम होगा।
- अरहर का अधिक उत्पादन प्राप्त करने हेतु मेड़ों पर बुवाई करें। अरहर, मूंगफली एवं तिल की बुआई प्राथमिकता के आधार पर करें।
- उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर ही करें। यदि किन्हीं करणोंवश मृदा का परीक्षण न हुआ हो तो उर्वरकों की संस्तुत मात्रा का प्रयोग करें।
- दलहनी एवं तिलहनी फसलों में जल भराव न होने दें, जल निकास का उचित प्रबन्ध करें।
- लता वाली सब्जियों को मचान पर ही लगायें।
- रोग, बीमारी आदि से बचने हेतु पशुओं को देर तक पानी में भीगने न दें।
- माइक्रो–इरीगेशन योजना के अंतर्गत उद्यान विभाग द्वारा लघु व सीमान्त कृषकों को 90 प्रतिशत तथा सामान्य कृषकों को 80 प्रतिशत अनुदान दिया जा रहा है। अतः किसान कृषि विभाग के पोर्टल पर इसका रजिस्ट्रेशन कराकर लाभ लें।
- कृषि विभाग द्वारा सहभागी फसल निगरानी एवं निदान प्रणाली योजना के अन्तर्गत फसलों के रोग व कीटों के प्रकोप के निदान के लिये मो. न. 945225711, 945224711 पर एस.एम.एस. करें। चौबीस घण्टे के अन्दर निदान कृषि विभाग द्वारा एस.एम.एस. के माध्यम से उपलब्ध करा दिया जायेगा।
- मौसम की अनिश्चितताओं एवं देवीं आपदाओं के विरूद्ध अधिसूचित फसलों को बीमा कवर प्रदान करने के उद्देश्य से प्रदेश में सरकार द्वारा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना वर्ष 2017–18 में संचालित की जा रही है प्रदेश शासन द्वारा जिसकी अधिसूचना जारी की जा चुकी है। इस योजना में अधिसूचित फसल बोने वाले सभी कृषक कवर हैं। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजनान्तर्गत खरीफ में धान, ज्वार, बाजरा, मक्का, उर्द, मूँग, अरहर, तिल, सोयाबीन व मूँगफली को अधिसूचित किया गया है। पुनर्गठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना केला हेतु कुशीनगर, गोरखपुर, महाराजगंज, देवरिया, बहराइच, बाराबंकी, इलाहाबाद, कौशाम्बी जनपदों में तथा मिर्च हेतु फतेहपुर, फिरोजाबाद, बाराबंकी, बरेली, खीरी, मिर्जापुर, शाहजहॉपुर जनपदों में संचालित है। कृषक अपनी फसल का बीमा अपने नजदीक के सहकारी/व्यावसायिक बैंकों/बीमा कम्पनी के मध्यस्थ/एजेण्ट के माध्यम से करा सकते हैं। उक्त दोनों योजनाओं में बीमा करने की अवधि 31 जुलाई, 2017 तक है। अतः फसलों का बीमा यथाशीघ्र करायें।

Crop Weather Watch Group Advisory

U.P. Council of Agricultural Research, Lucknow

धान की खेती

- बासमती धान की टाइप–3, बासमती–370, तारावड़ी बासमती आदि प्रजातियों को पश्चिमी उ0प्र0 में जुलाई के अन्तिम सप्ताह व पूर्वी उ0प्र0 में अगस्त के प्रथम पक्ष में रोपाई करें, जिससे दाने की गुणवत्ता व सुगन्ध का विकास अच्छी तरह से हो सके।
- धान की 20–25 दिन वाली पौध की रोपाई प्रत्येक वर्गमीटर में 35–50 हिल तथा 2–3 पौधा प्रति हिल 3–4 सेमी. की गहराई तक करें।
- समय से रोपित धान में नत्रजन की कुल संस्तुत मात्रा का चौथाई नत्रजन प्रथम टॉप ड्रेसिंग के रूप में करें।
- निचली जमीन जहॉ धान की फसल नष्ट हो गई है तो अधिक अवधि वाली पौध से डबल ट्रान्सप्लांटिंग (संडा विधि) करें।
- रोपित धान में यदि खैरा रोग लगा है तो रोग नियंत्रण के लिये फसल पर 5 किग्रा. जिंग सल्फेट तथा 20 किग्रा. यूरिया अथवा 2.5 किग्रा. बुझे हुये चूने के साथ 800 ली. पानी में मिलाकर प्रति हे. की दर से पर्णीय छिड़काव करें।
- धान में उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करें यदि किन्हीं कारणोंवश मृदा का परीक्षण न हुआ हो तो फास्फोरस व पोटाश की संस्तुत पूरी मात्रा तथा नत्रजन की एक तिहाई मात्रा रोपाई से पूर्व प्रयोग करें। जिन क्षेत्रों में जिंक की कमी से खैरा रोग का प्रकोप हो वहॉ जिंक सल्फेट (21 प्रतिशत) 20–25 किग्रा. प्रति हे. की दर से रोपाई के पूर्व आखिरी जुताई पर भूमि में मिला दें।
- रोपाई के उपरान्त संकरी व चौड़ी पत्ती दोनों प्रकार के खरपतवारों के नियन्त्रण हेतु ब्यूटाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. 3–4 लीटर अथवा एनीलोफास 30 प्रतिशत ई.सी. 1.25–1.50 लीटर प्रति हे. तथा सीधी बुवाई के लिये प्रोटिलाक्लोर 50 प्रतिशत ई.सी. 1.60 लीटर मात्रा प्रति हे. की दर से लगभग 500 ली. पानी में घोलकर फ्लैटफैन नॉजिल से 2 इंच भरे पानी में रोपाई के 2–3 दिन के अन्दर छिड़काव करें।
- रोपाई की स्थिति में संकरी एवं चौड़ी दोनों प्रकार के खरपतवारों के नियंत्रण हेतु रोपाई के 15–20 दिन बाद नमी की स्थिति में बिसपाइरीबैक सोडियम 10 प्रतिशत एस.सी. 0.20 ली. 500 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- धान की फसल में जड़ की सूंड़ी का प्रकोप होने पर क्लोरपायरीफास 20 ई.सी. की 2.5 ली. सिंचाई के पानी के साथ अथवा फोरेट 10 की 10 किग्रा. मात्रा प्रति हे. की दर से 3–5 सेमी. स्थिर पानी में बुरकाव करें।
- भूरा फुदका एवं सैनिक कीट बाहुल्य क्षेत्रों में 20 पंक्तियों के बाद एक पंक्ति छोड़ कर रोपाई करें।

मक्का की खेती

- मक्का की निराई, गुड़ाई तथा विरलीकरण सहित हल्की मिट्टी चढ़ाऍं।
- 45–60 दिन की मक्का की फसल में नत्रजन की कुल संस्तुत मात्रा की एक चौथाई टॉप ड्रेसिंग के रूप में दें।
- मक्का में प्ररोह मक्खी के नियन्त्रण के लिये कार्बोफ्यूरान 3 जी की 20 किग्रा. अथवा फोरेट 10 जी की 20 किग्रा. अथवा क्यूनालफास 25 ई.सी. 1.50 लीटर प्रति हे. की दर से प्रयोग करें।

बाजरा की खेती

- बाजरा की संकुल प्रजातियों यथा आई.सी.एम.बी.–155, डब्लू.सी.सी.–75, आई.सी.टी.पी.–8203, राज–171, न.दे.एफ.बी–3, व संकर प्रजातियों यथा पूसा–23, पूसा–322 तथा आई.सी.एम.एच.–451 की बुवाई करें।

अरहर की खेती

- अरहर की अधिक उपज हेतु उन्नत देर से पकने वाली प्रजातियों यथा मालवीय चमत्कार, नरेन्द्र अरहर–2, बहार, अमर, नरेन्द्र अरहर–1, आजाद, पूसा–9 तथा मालवीय विकास (एम.ए.6) की बुवाई करें।
- उपचारित बीज का ही प्रयोग करें यदि बीज उपचारित नहीं है तो 2 ग्राम थीरम तथा एक ग्राम कार्बेन्डानिजम के मिश्रण से उपचारित करें। बोने से पहले बीज को अरहर के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करें।
- खरपतवार नियंत्रण हेतु पेंडीमेथलीन 3.3 ली. प्रति हे. की दर से पानी में मिलाकर बुवाई के तुरंत बाद छिड़काव करें।

उर्द एवं मूंग की खेती

- उर्द की शीघ्र पकने वाली प्रजातियों यथा पंत उर्द 31, पंत यू–30, नरेन्द्र उर्द–1, पंत यू–35, आजाद उर्द–2 तथा आई.पी.यू.–94–1 की बुवाई करें।
- मूॅग की संस्तुत प्रजातियों मेहा 99–125, नरेन्द्र मूॅग–1, पंत मूॅग–4, मालवीय ज्योति, मालवीय जनचेतना, मालवीय जनप्रिया, मालवीय जागृति, आशा, टी.एम.–9937, मालवीय जलकल्याणी, एम.एच.–2.15 की व्यवस्था कर दिनांक 25 जुलाई से बुवाई करें।
- यदि उर्द/मूॅग का बीज शोधित न हो तो बीज को 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम अथवा 2.00 ग्राम थीरम से प्रति किग्रा. बीज की दर से शोधित करने के बाद उर्द/मूॅग का राइजोबियम कल्चर के 1 पैकेट से 10 किग्रा. बीज का उपचार करें।

तिल की खेती

- तिल की उन्नत व अधिक उपज वाली प्रजातियों यथा आर.टी.–351, तरूण, प्रगति, शेखर, टा.–78, टा.–13, टा.–4 व टा.–12 की बुवाई करें।
- फाइलोडी रोग से बचाव हेतु बुवाई के समय कूँड़ में फोरेट 10 जी. 15 किग्रा. प्रति हे. की दर से प्रयोग करें।

गन्ना की खेती

- बेधक कीटों के जैविक नियंत्रण के लिये 50 हजार ट्राइकोग्रामा अंड युक्त ट्राइकोकार्ड प्रति हे. लगायें। कार्ड टुकडों में काटकर पंत्तियों की निचली सतह पर नत्थी कर दें। यह कार्य 10 दिनों के अंतराल पर दोहरायें। ट्राइकोकार्ड भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ से प्राप्त किये जा सकते हैं।
- जुलाई माह से गन्ने की लम्बवत् बढ़वार शुरू होती है। किल्ले फूटने/निकलने की प्रक्रिया पर रोक लगाने के लिये गन्ने की पंक्तियों में मिट्टी चढ़ायें। मिट्टी चढ़ाने से गन्ना गिरने से भी बच जाता है। पेड़ी की बंधाई करें।
- पायरीला का प्रकोप होने पर तथा परजीवी (इपीरिकेनिया मेलानोल्यूका) न पाये जाने की स्थिति में क्वीनालफास 25 प्रतिशत घोल 0.80 ली. प्रति हे. 625 ली. पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- अधिक वर्षा की दशा में 24 घंटे खेत में पानी रुकने की स्थिति में जल निकास का प्रबंध करें।
- किसी भी रोग से ग्रसित पौधों को खेत से जड़ सहित निकालकर नष्ट कर दें तथा रिक्त हुए स्थान पर संवर्धित ट्रइकोडर्मा का बुरकाव कर दें।

सब्जियों की खेती

- पूर्व में रोपित बैंगन व मिर्च के पौधों पर मिट्टी चढ़ायें।
- गोल बैंगन की रोपाई करें।
- गोभी वर्गीय सब्जियों, मिर्च, टमाटर आदि के बीजों की पौधशाला में उठी हुई क्यारियों में बुवाई करें।
- अदरक में कन्द सड़न रोग दिखाई पड़ने पर चेस्ट नट कम्पाउन्ड (11 भाग अमोनियम कार्बोनेट+2 भाग कॉपर सल्फेट का छिड़काव करें।
- हल्दी एवं अदरक में निराई–गुड़ाई, अवशेष एक तिहाई नत्रजन की टापड्रेसिंग तथा जल निकास का उचित प्रबन्ध करें।
- अगेती बैंगन में तना एवं फल बेधक का प्रकोप होने पर नीम आधारित कीटनाशक 3 मिली./लीटर पानी में घोल कर अथवा मैलाथियान 50 ई.सी. का 1 मिली./ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- मिर्च में विषाणु रोग हेतु संवाहक कीट के नियंत्रण हेतु अन्तःप्रवाही कीटनाशक मिथइल ओ डिमेटान 25 ई.सी. 1 मिली./ली. पानी की दर से छिड़काव करें।

बागवानी

- आम, अमरूद, ऑवला, लीची, बेर व नींबू वर्गीय पौधों का रोपण के लिये मौसम अनुकूल है अतः रोपण करें।
- आम के नवीन बाग लगाते समय परागण हेतु उपयुक्त किस्मों का 10 प्रतिशत रोपण अवश्य करें। दशहरी प्रजाति के साथ बाग में बम्बई हरा, गौरजीत को परागण किस्म के रूप में रोपित करें।
- पौध प्रवर्धन हेतु आम में ग्राफ्टिंग का कार्य करें।
- मूलवृंत हेतु आम की गुठली एकत्र कर बुवाई करें।
- आम में शल्क कीट तथा शाखा गॉठ कीट की रोकथाम हेतु डाइमेथोएट (1.5 मिली./ली. पानी) या डायजिनान (2 मिली./ली. पानी) का छिड़काव करें।
- केले की पुत्ती का रोपण करें। उपलब्धतानुसार केले की ऊतक संवर्धित प्रजाति जी–9 की पौध वरीयता पर लगायें।
- केले के पुराने बागों में 50–60 ग्राम यूरिया एवं 100–125 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति पौधे की दर से दें एवं गुड़ाई करें।
- केले में एक तलवार पुत्ती को छोड़ते हुए शेष पुत्तियों की कटाई करें तथा फल वाले पौधों में स्टेकिंग (सहारा) दें।
- वर्तमान मौसम नींबू के कैंकर रोग के लिए अनुकूल है अतः रोकथाम हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड 3–4 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर साफ मौसम में छिड़काव करें।
- नींबू की तितली की रोकथाम हेतु डायमीथोएट 30 ई.सी. की एक मिली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- ऑवले में अवशेष आधी नत्रजन एवं पोटाश की मात्रा थाले में मिलायें तथा फल सड़न की रोकथाम हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड 3 ग्राम प्रति ली. पानी तथा बोरेक्स (6–8 ग्रा. प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें।

पशुपालन

- बड़े पशुओं में गलाघोंटू बीमारी की रोकथाम हेतु एच.एस. से तथा लंगड़िया बुखार की रोकथाम हेतु बी.क्यू. वैक्सीन से टीकाकरण यदि अभी तक नहीं कराया है तो शीघ्र करा लें। यह सुविधा सभी पशु चिकित्सालय पर निःशुल्क उपलब्ध है।
- वर्तमान मौसम में पशुओं को खुजली होने की संभावना होती है अतः इसके लिये सरसों के तेल में कपूर डालकर गरम कर लें

तथा पशुओं को साबुन से नहला कर इसे लगायें।

- गाय, भैंस के ब्याने के बाद थनैला रोग की सम्भावना रहती है। थनैला रोग से पशुओं को बचाने हेतु थन साफ रखें तथा पशुओं को दुहाई के आधे घंटे तक बैठने न दें।
- पशुओं को खनिज लवण अवश्य दें, पर्याप्त मात्रा में साफ पानी पिलायें तथा दो दिन से अधिक का कटा हुआ हरा चारा न खिलायें।
- मुर्गियों का बिछावन उलट–पलट कर उसमें 2 से 3 किग्रा. चूना प्रति 100 वर्ग फिट की दर से मिलायें।
- कुक्कुटों में नमी की वजह से कॉक्सीडियोसिस का प्रकोप बढ़ जाता है। अतः दाना शुष्क स्थान पर भण्डारण करें तथा रोग होने पर एम्प्रोजोल (20 प्रतिशत) 30 ग्राम 100 ली. जल में घोलकर कुक्कुटों को पिलायें।
- पशुओं को मच्छर व डांस मक्खी से बचाव हेतु धुंआँ करें।
- जब तक वर्षा का पानी चराई वाले स्थानों पर भरा है तब तक पशुओं को चरने के लिये बाहर न छोड़ें। पशुओं को कीचड़ में ना बांधें उन्हें ढलान वाले स्थानों पर बांधें।
- खरीफ चारा फसलों की बुवाई हेतु अनुकूल मौसम है अतः **ज्वार** की उन्नत किस्मों यथा मीठी ज्वार (रियो), पी.सी.–6, पी.सी.–9, यूपी.चरी–1 व 2, पंत चरी–3, एच.सी.–308, हरियाना चरी–171 व पंत चरी–4, **लोबिया** की किस्मों यथा रशियन जायन्ट, यू.पी.सी.–5286, 5287, एन.पी.–3, बुन्देल लोबिया–2, यू.पी.सी.–9202, यू.पी.सी.–4200, यू.पी.सी.–8705, **मक्का** की संकर किस्मों प्रोटीन, गंगा–2, गंगा–5, गंगा–7 तथा संकुल मक्का की किस्मों किसान, अफ्रीकन टाल और विजय तथा देशी मक्का की टाइप–41 किस्मों **बाजरा** की किस्मों यथा जाइन्ट बाजरा, राजबो बाजरा, राज बाजरा तथा ग्वार की किस्मों यथा टाइप–2, एफ.एस.–227, एच.एफ.जी.–119, एच.एफ.जी.–156, बुन्देल ग्वार–1, बुन्देल ग्वार–2 तथा आई.जी.एफ.आर.आई.–2 की बुआई करें। गुणवत्तायुक्त पौष्टिक चारे हेतु ज्वार–लोबिया या मक्का–लोबिया की मिश्रित बुवाई करें।
- बहु–वर्षीय घासों की रोपाई का कार्य तुरन्त करें।

मत्स्य पालन

- उ0प्र0 मत्स्य विकास निगम की हैचरियों पर तथा निजी क्षेत्र की हैचरियों पर मत्स्य बीज उपलब्ध है। उ0प्र0 मत्स्य विकास निगम की हैचरियों से मत्स्य बीज का वितरण कार्य प्रारम्भ है। इच्छुक मत्स्य पालक अपने तालाबों में मत्स्य बीज का संचय करायें। संचित मत्स्य बीज को शरीर भार का 1–2 प्रतिशत पूरक आहार दें।
- जिन मत्स्य पालकों ने अभी तक चूने एवं खाद का प्रयोग नही किया है, उन्हें सलाह दी जाती है कि वे शीघ्र अपने तालाब में बुझा हुआ चूना 20–25 किग्रा. प्रति हे. की दर से एवं गोबर की खाद 2.5 टन/हे. की दर से पहली किस्त के रूप में डालकर पानी भरें तथा पानी भरने के तीन दिन बाद 10000 मत्स्य बीज (अंगुलिकाएं) प्रति हे. की दर से संचय करायें।
- मत्स्य पालक जनपद स्तर पर कार्यालय मत्स्य पालक विकास अधिकरण में मत्स्य बीज हेतु मांगपत्र दे दें ताकि समय से उनके तालाब में मत्स्य बीज का संचय हो सके।
- मत्स्य बीज को 15 मिनट तक पानी में पैकेट बिना खोले रखें तत्पश्चात तालाब में पैकेट से मत्स्य बीज छोड़ें जिससे तापमान के अन्तर से मत्स्य बीज को क्षति न हो।
- मत्स्य बीज उत्पादक अपने ब्रूड फिश को पूरक आहार शरीर भार के दो प्रतिशत की दर से प्रतिदिन खिलायें। तालाब का जलस्तर 5 से 6 फुट बनाये रखें।
- जिन तालाबों में मत्स्य बीज संचय हो गया हो उनमें बड़े आकार के जाल से जलप्लावित खरपतवार निकाल दें। जाल डालने से पूर्व व प्रयोग के बाद जाल को पोटेशियम परमेंगनेट (2–5 प्रतिशत) के घोल में डुबायें।
- जिन जनपदों में पर्याप्त वर्षा हुई है तथा तालाबों में पानी का स्तर 1 मीटर तक हो गया है वहाँ तत्काल मत्स्य बीज संचय करायें।
- मत्स्य पालन के तालाबों के बंधों पर नींबू, केला, करोंदा आदि का रोपण करें।
- थाई मॉगुर एवं बिगहेड मछली पालना प्रतिबन्धित है। इसको न पाला जाये।

वानिकी

- पौधशाला में अंकुरण क्यारियाँ तैयार कर आम, गुलमोहर, महुआ, कटहल, जामुन, कंजी, नीम आदि के बीजों की बुआई यथाशीघ्र कर लें। अंकुरित पौधों को रूट ट्रेनर/थैलियों में प्रतिरोपित कर रख दें।
- मौसम अनुकूल है अतः क्षेत्र में पौध रोपण का कार्य शीघ्र पूर्ण करें।

विशेष

- खरीफ, रबी एवं जायद फसलों की सघन पद्धतियों में नवीन एवं संस्तुत तकनीकी का समावेश होना आवश्यक है। इसके लिये विश्वविद्यालयों के कुलपतियों एवं निदेशक शोध को अलग से महानिदेशक, उपकार की तरफ से पत्र लिखे जाने का सुझाव दिया गया जिसमें सम्बन्धित कुलपतियों एवं निदेशक शोध से अनुरोध किया जाना है कि 28 जुलाई, 2017 को प्रस्तावित रबी फसलों

की सघन पद्धतियों की बैठक में सम्बन्धित फसलों के विशेषज्ञ विशेष रूप से पादप प्रजनक, शस्य वैज्ञानिक, कीट वैज्ञानिक एवं पादप रोग वैज्ञानिकों की सहभागिता सुनिश्चित करायी जाय।

- उ.प्र. बीज प्रजाति विमोचन समिति द्वारा संस्तुत एवं नोटीफाइड नवीन प्रजातियों तथा तकनीक का समावेश सघन पद्धतियों में किया जाना आवश्यक है। इस संदर्भ में पिछले दस वर्षों में विकसित/नोटीफाइड सभी फसलों की प्रजातियों का ब्रीडर/फाउंडेशन सीड का उत्पादन सुनिश्चित किया जाय। इसके लिये कृषि विभाग द्वारा समय से सम्बन्धित कृषि विश्वविद्यालय के निदेशक शोध/बीज उत्पादन इकाई को मांग–पत्र दिये जाने की आवश्यकता है जिससे कि पर्याप्त मात्रा में नवीन प्रजातियों का ब्रीडर सीड विश्वविद्यालय द्वारा उत्पादित किया जा सके तथा उन्हें सीड चेन में लाया जा सके।
- उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा पिछले साढ़े चार वर्षों में सीमित संसाधनों में भी प्रदेश कृषि हित में विभिन्न महत्वपूर्ण कार्य किये गये हैं जैसे–प्रदेश के कृषि वैज्ञानिकों को एक ही मंच पर लाने तथा उन्हें प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रदेश में उत्तर प्रदेश कृषि विज्ञान अकादमी की स्थापना, प्रत्येक वर्ष उत्तर प्रदेश कृषि विज्ञान कांग्रेस का आयोजन, कृषि विश्वविद्यालय अधिनियम का संशोधित प्रारूप तैयार करना, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद अधिनियम प्रारूप तैयार करना, अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन, प्रदेश की विभिन्न कृषि एवं तत्संबंधित विषयों की ज्वलंत समस्याओं पर 40 से अधिक ब्रेन स्टार्मिंग सत्र/कार्यशाला/सेमिनार आयोजित कर प्रदेश सरकार को सलाह दिया जाना, प्रदेश की विभिन्न कृषि एवं तत्सम्बन्धी प्राथमिकताओं पर प्रदेश में स्थित कृषि विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थाओं के माध्यम से 80 से अधिक परियोजनाओं का वित्त पोषण, कृषि वैज्ञानिक सम्मान योजना का कियान्वयन, उपकार का नवीन भवन तैयार किया जाना इत्यादि महत्वपूर्ण कार्य किये गये हैं। उपरोक्त कार्यों के दृष्टिगत समूह के सदस्यों द्वारा सम्यक रूप से उपकार को प्रदेश स्तर पर कृषि की उत्कृष्ट संस्था घोषित किये जाने की संस्तुति की गई।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 2 अगस्त, 2017 को प्रातः 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः

- क्राप वेदर वाच ग्रुप की बैठकों की संस्तुतियॉ वेबसाईट **www.upcaronline.org** पर भी उपलब्ध है।
- मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह की संस्तुतियॉ इफ्को किसान संचार लिमिटेड के माध्यम से 9 लाख कृषकों को वॉयस एस.एम.एस. द्वारा प्रेषित की जा रही हैं।